महाभारत

आदिकाव्य रामायण के समान ही महाभारत हमारा राष्ट्रीय इतिहास है। ~~इसे~~ इसे विश्वसाहित्य के इतिहास में सबसे बड़ा महाकाव्य माना जाता है। यह विशालकाय ग्रन्थ सर्वविध ज्ञानतत्त्वों से परिपूर्ण है। महाभारत में स्वयं कहा गया है-

"धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥"
(आदिपर्व/62/53)

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो कुछ महाभारत में कहा गया है, वही अन्यत्र है; जो इसमें नहीं है, वह कहीं नहीं है।

महाभारत के सार्वभौम महत्त्व की ~~चर्चा~~ चर्चा करते हुए आचार्य वाचस्पति गैरोला का कथन है-

"~~महाभारत~~ वस्तुतः वह (महाभारत) एक बृहद् राष्ट्र का ज्ञानसर्वस्व होने के कारण आर्ष ग्रन्थ भी है, इतिहास-पुराण भी है और महाकाव्य, धर्मग्रन्थ आदि सभी कुछ है। इस भी हमें यह न समझना चाहिए कि 'महाभारत' का यह सर्वाङ्गीभूत कलेवर विभिन्न विषयों का स्पर्श कर देने मात्र से पूरा हो गया, वरन् यह समझना चाहिए कि उसके हर पहलू में आकाश को स्पर्श करने जितना उत्कर्ष विद्यमान है। महाभारत भारत की उज्ज्वल ज्ञान-परम्परा का एक मात्र अमर स्मारक है। वैदिक और लौकिक युगों के संघर्षमय काल में उनके अधिकारों का परिसीमन करने के लिए महाभारत एक संधियत्र के समान है, जिसमें वैदिक और लौकिक दोनों युगों के प्रतिनिधि ज्ञानप्रवण

मनस्वियों के हस्ताक्षरों की मुहर है। ऐसे महाग्रन्थ को, जिसमें भारत के इतने उच्चादर्श समाहित हैं, जितना भी सम्मान दिया जाए, कम ही है।"

महाभारत में स्पष्ट कहा गया है कि यह ग्रन्थ महासागर की भाँति है जिसमें पूर्वकालीन सभी प्रकार की व्यावहारिक जीवन से सम्बद्ध रचनाओं का संकलन है –

"धर्मशास्त्रमिदं पुण्यमर्थशास्त्रमिदं परम्।
मोक्षशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामितबुद्धिना॥"
(आदिपर्व/62/23)

× × ×

"अष्टादशपुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः।
वेदाः साङ्गास्तथैकत्र भारतं चैकतः स्थितम्॥"
(स्वर्गारोहणपर्व/5/46)

महाभारत साधारणतः इतिहासकोटि में परिगणित होता है। प्राचीनकाल से ही इसे सर्वोत्कृष्ट इतिहास माना गया है। भारतीय परिभाषा के अनुसार इतिहास में वर्ण्य विषयों की विविधता होती है और इसमें पुराण, इतिवृत, आख्यायिका, आख्यान, उपाख्यान, कथा, उदाहरण, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों का समावेश रहता है। कहा है-

"पुराणम्- इतिवृतम्-आख्यायिका- उदाहरणं
धर्मशास्त्रम् अर्थशास्त्रं चेति इतिहासः।"

स्वयं महाभारत में इसे इतिहास की श्रेणी में रखा गया है –

"इतिहासोत्तमादस्माज्जायन्ते कविबुद्धयः।
इतिहासप्रदीपेन मोहावरणघातिना॥
लोकगर्भगृहं कृत्स्नं यथावत्संप्रकाशितम्।"
(आदिपर्व)

Scanned with CamScanner

महाभारत को काव्य श्रेणी में रखा जाता है। इस ग्रन्थ की अनेक उपाधियों में से एक 'काव्य भी है। यही कारण है कि यह महाकाव्यों, नाटकों आदि का उद्गम स्थान है। महाभारत को स्वयं वेदव्यास और ब्रह्माजी के द्वारा काव्य की संज्ञा दी गई है-

"उवाच स महातेजा ब्रह्माणं परमेष्ठिनम्॥
कृतं मयेदं भगवान् काव्यं परमपूजितम्।
त्वया च काव्यमित्युक्तं तस्मात्काव्यं भविष्यति॥"
(आदिपर्व)

महाभारत के आरम्भ में ही इसके विषय में कतिपय महत्त्वपूर्ण बातें लिखी गई हैं। प्रो॰ विण्टरनित्स ने इसका उल्लेख अपनी पुस्तक में किया है। इसका उल्लेख आगे किया जा रहा है-

"जैसे दही में मक्खन, आर्यों में ब्राह्मण, वेदों में आरण्यक, औषधियों में अमृत, जलाशयों में समुद्र और चौपायों में गाय प्रधान है, वैसे ही इतिहासों में महाभारत प्रधान है।"

× × ×

"जिस किसी ने इस कथा को सुन लिया है, उसको अन्य किसी कथा में आनन्द नहीं मिलेगा चाहे वह कथा कितनी ही अच्छी क्यों न हो; जैसे कोकिल का गीत सुन लेनेवाले को कौवे की कठोर वाणी में आनन्द नहीं मिलता।"

× × ×

"इस सर्वश्रेष्ठ इतिहास से ही कवि लोग अपने विचार का निर्माण करते हैं जैसे पाँच भूतों से तीनों लोकों का निर्माण होता है।"

× × ×

"यह इतिहास जय का काव्य है। जो राजा जय चाहता है, यदि वह इसका श्रवण करे तो वह सारी पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर लेगा और अपने शत्रुओं को जीत लेगा।"

× × ×

Scanned with CamScanner

"यह धर्म का पवित्र ग्रन्थ है, यह अर्थ का श्रेष्ठ ग्रन्थ है। अनन्त बुद्धि वाले व्यास ने इसे मोक्ष के ग्रन्थ के रूप में भी लिखा।"

* * *

महावैयाकरण पाणिनि ने 'महाभारत' शब्द की वैयाकरणिक व्युत्पत्ति सिद्ध की है। इसके अनुसार भारत शब्द में महान् शब्द लगाने पर यह शब्द निष्पन्न होता है। महाभारत के टीकाकारों ने इसका अर्थ किया है- "भारता योद्धारो यस्मिन् युद्धे तद् भारतम्" अर्थात् जिस युद्ध को भारतवंशी योद्धा लड़े हों वह भारत कहलाया। महाभारत में इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है-

"चतुर्भ्यः सरहस्येभ्यो वेदेभ्यो ह्यधिकं यदा।
तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन् महाभारतमुच्यते॥
महत्त्वे च गुरुत्वे च ध्रियमाणो यतोधिकम्।
महत्त्वाच्च भारवत्वाच्च महाभारतमुच्यते॥
निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते॥"

अर्थात्

क्योंकि वह महत्त्व में और भार में यह उपनिषदों सहित चारों वेदों से अधिक है, इसलिए लोक में इसे महाभारत कहते हैं। महानता और भार अधिक होने से इसे महाभारत कहते हैं। जो इसकी निरुक्ति को जानता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

महाभारत के रचयिता :

जगद्व्यापी सारस्वत प्रासाद के सर्वमान्य पुरोधा और संरक्षक कृष्णद्वैपायन वेदव्यास महाभारत के रचयिता हैं। ये अनुपम विश्वमंगलविधायक हैं। इनकी कृतियों (महाभारत एवं अष्टादश) के अनुशीलन के पश्चात् यह कहने में किञ्चित् भी विचिकित्सा

Scanned with CamScanner

नहीं है कि त्रिकालदर्शी वेदव्यास भारत के भाग्यविधाता, संसार के पथप्रदर्शक एवं ज्ञानियों के अनुपम गुरु हैं। वस्तुतः अलोकसामान्य वेदव्यास को पूर्णरूप से जानने में कोई समर्थ नहीं है। इन्होंने तीन वर्षों के सतत परिश्रम से महाभारत की रचना की—

"त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम् ॥"
(आदिपर्व/56/52)

भारतीय साहित्य में वेदव्यास एक ऐसे अमर स्मारक, ऐसे युग-निर्माता महापुरुष हुए, जिन्होंने एक ओर तो सहस्रों वर्षों से भरपूर बृहद् ज्ञानसरोवर की जीर्णोन्मुख चहारदीवारी का पुनरुद्धार किया और दूसरी ओर उस आकण्ठ भरपूर महाज्ञान सरोवर से काट-छाँटकर ऐसी विभिन्न ज्ञानधाराओं को कूलित किया, जिनसे सिञ्चित होकर भारत की विचारभूमि निरन्तर फलती-फूलती रही।

व्यास के पिता महर्षि पराशर और माता सत्यवती थी। यही सत्यवती कौरव-पाण्डवों की प्रपितामही थी। राजा शान्तनु से विवाहित होकर वह चित्रांगद और विचित्रवीर्य की जननी बनी। विचित्रवीर्य के निःसन्तान मर जाने पर सत्यवती की आज्ञा से उसकी पत्नियों से नियोग द्वारा व्यास ने धृष्टराष्ट्र और पाण्डु को उत्पन्न किया। इसका उल्लेख श्रीमद्देवीभागवत पुराण में मिलता है—

"व्यासवीर्यात्तु संजातो धृतराष्ट्रोऽन्ध एव च।
मुनिं दृष्ट्वाऽथकामिन्या नेत्रसंमीलने कृते ॥
श्वेतरूपौ यतो जाता दृष्ट्वा व्यासं नृपात्मजा।
व्यासकोपात् समुत्पन्नः पांडुस्तेन न संशयः ॥"